छत्तीसगढ़ के लोकजीवन और लोकसाहित्य में 'बोरे–बासी' का विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. अजय कुमार शुक्ल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी)

श्री चंदन सिंह राजपूत
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
कला एवं मानविकी संकाय
कलिंगा वि.वि. नया रायपुर (छ.ग.)

शोध सारांशः–

छत्तीसगढ़ प्रदेश को ''धान के कटोरा'' के रूप में जाना जाता है। यहाँ के लोकजीवन में ''चावल'' का विशेष महत्व है। चावल भात से बनी हुयी बोरे–बासी छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति में घुली–मिली है। यह पौष्टिकता के गुणों से भरपूर है। छत्तीसगढ़ की ग्रामीण जनता का यह प्रिय भोज्य प्रदार्थ है। छत्तीसगढ़ के साहित्य, लोकसंस्कृति एवं लोकपरंपराओं में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

बीज शब्दः–

छत्तीसगढ़, धान (चावल), बोरे–बासी, पौष्टिकता, लोकजीवन, लोकसंस्कृति।

प्रस्तावनाः–

भारतवर्ष के नवगठित राज्यों में छत्तीसगढ़ का महत्वपूर्ण स्थान है। 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ को नये राज्य के रूप में मान्यता प्रदान की गयी। प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ एक जनजाति बहुल राज्य है। साहित्य, कला–संस्कृति, प्राकृतिक–सौंदर्य और खान–पान की दृष्टि में इस राज्य के विविध आयाम है। छत्तीसगढ़ प्रदेश की भौगोलिक संरचना एवं जलवायु के कारण यहाँ पर सबसे ज्यादा धान का पैदावार होती है। छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती भाग में पर्वत और पठार है। जबकि बीच का भाग समतल है। इसी मैदानी भाग में सबसे ज्यादा धान की खेती होती है। यहाँ के निवासियों के लिए चावल का विशेष महत्व है। विभिन्न पर्व–त्यौहार एवं मांगलिक आयोजनों में चावल के विशेष व्यंजन बनते है। चावल से बने हुए चीला, फरा, चौसेला, अइरसा, पीडिया, अनारसा और अंगाकर रोटी जैसे पारंपरिक व्यंजन यहाँ की पहचान है। गर्मी के दिनों में छत्तीसगढ़ के निवासियों के खान–पान में बोरे–बासी का विशेष महत्व है। यहाँ कि लोकसंस्कृति और साहित्य में इसे महत्वपूर्ण दर्जा प्राप्त है। यह व्यंजन ग्रामीणों के

दिनचर्या में शामिल है। प्रस्तुत शोधपत्र में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक व्यंजन ''बोरे–बासी'' के महत्व पर विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

छत्तीसगढ़ और बोरे–बासीः–

छत्तीसगढ़ का मनुष्य सरल, सहज, शांत–चित्त, भोला और संवेदनशील हैं। इसका एक कारण उसका खान–पान और रहन–सहन है। गाँव का किसान–मजदूर, घर के महिला–बच्चे और बूढ़े बासी और बोरे भात को बड़े चाव से खाते हैं। शारीरिक रूप से यह भोजन उन्हें और उनके मन–मस्तिष्क को शीतल रखता है और ऊर्जावान बनाता है। आसानी से बन जाने और सर्वसुलभता के कारण बोरे–बासी छत्तीसगढ़ का मुख्य आहार है। गर्मी के दिनों में तो छत्तीसगढ़ियां दिनभर बोरे–बासी ही खाते रहते हैं। छत्तीसगढ़ के अलावा यह अलग–अलग नाम से उड़ीसा, बिहार, झारखण्ड़, उत्तरप्रदेश और दक्षिण भारत के कई राज्यों में चाव के साथ खाया जाता है।

छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध साहित्यकार परदेशी राम वर्मा के अनुसार सुबह बने चावल या भात को पानी में ताजा–ताजा डूबाकर दोपहर में खाते हैं तो उसे बोरे कहते हैं। जबकि रात को खाना खाने के बाद बचे हुए चावल को पानी में डूबाकर रख दिया जाता है और जब उसे सुबह में खाया जाता है, उसे बासी कहते हैं। सामान्यतौर से बोरे–बासी को प्याज मिर्ची और अचार के साथ खाया जाता है। जबकि संपन्न वर्ग के लोगों के द्वारा दही–मट्ठा, भाजी, बिजौरी, रखिया बड़ी, मसूर की दाल की सब्जी, अरहर की दाल और पापड़ के साथ बोरे बासी का आंनद लिया जाता है। पानी में डूबी रहने के कारण इसे बड़ी कटोरी जैसी आकृति वाली बटकी में खाना सुविधाजनक होता है। इसीलिए छत्तीसगढ़ अंचल में बोरे–बासी को थाली के बजाय गहराई वाली बटकी में रखकर खाया जाता है।

मानव स्वास्थ की दृष्टि में बोरे–बासी का महत्वः–

नये–नये शोध के उपरांत यह निष्कर्ष निकलकर सामने आया है कि स्वास्थ एवं पौष्टिकता की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है। गर्मी के दिनों में इसे खाने से शरीर का तापमान नियंत्रित रहता है। खूब प्यास लगती है। ज्यादा पानी पीने से हाइड्रेशन की समस्या नहीं होती है। थकान दूर हो जाती है और बहुत अच्छी नींद आती है। कुछ लोगों का यह मानना है कि इसे खाने से उच्च रक्तदाब नियंत्रित रहता है। इसमें पानी की भरपूर मात्रा होने के कारण मूत्र उत्सर्जन संबंधी समस्याओं का समाधान होता है। इसे खाने से मोटापा नहीं होता है, पथरी नहीं होती है और अनिंद्रा की बीमारी दूर होती है। होंठ नही फटते, मुंह में छाले की समस्या दूर होती है और चेहरे में ताजगी और स्फूर्ति बनी रहती है। इसमें फाइबर, स्टार्च, आयरन, विटामिन बी–12, पोटेशियम और कैल्सियम होता है। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुपयोगी है। वर्तमान परिवेश में जिस तरह से महंगाई बढ़ रही है। रोजमर्रा की चींजो की कीमतें बढ़ रही है ऐसे समय में इससे अच्छा, सस्ता और पौष्टिक भोजन मिलना मुश्किल है।

छत्तीसगढ़ लोकसंस्कृति और साहित्य में बोरे–बासीः–

छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में बोरे–बासी का विशेष महत्व है। यहाँ की लोकसंस्कृति के अतंर्गत लोकगीत, लोकसाहित्य और लोकपरंपराओं में बोरे–बासी का उल्लेख सर्वत्र व्याप्त है। छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रत्येक कवि की एक न एक रचना में बासी का वर्णन जरूर मिलता है। यहाँ के लोककलाकार एवं गीतकारों ने बासी पर खूब लिखा–गाया है। छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध गायक दिलीप षड़ंगी का गाया हुआ गीत– ''बोरे–बासी संग म पताल चटनी.....'' बहुत लोकप्रिय गीत है। इसी क्रम में अनेक गीतकारों ने बोरे–बासी के ऊपर लोकप्रिय गीतों की रचना की है।

छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, राजनीतिज्ञ एवं समाजसुधारक डॉ. खूबचंद बघेल के द्वारा रचित जनरैल सिंह नाटक में बोरे–बासी के ऊपर खूबसूरत गीत की रचना द्रष्टव्य है–

बासी के गुण कहुँ कहाँ तक, इसे ना टालो हाँसी में,
गजब बिटामिन भरे हुये हैं, छत्तीसगढ़ के बासी में।
अंतिम बासी को सांधा, निज यौवन पूरन मासी में,
बुद्ध–कबीर मिले मुझको, बस छत्तीसगढ़ के बासी में।

इसी क्रम में छत्तीसगढ़ के जनकवि के रूप में विख्यात कोदूराम दलित ने शरीर को हष्ट–पुष्ट बनाने के लिए सभी को बोरे–बासी खाने की सलाह देते हुए यह लिखा है कि इसमें पौष्टिकता के बहुत सारे गुण है–

बासी मा गुन हे गजब, एला सब झन खाव।
ठठिया भर पसिया पियौ, तन ला पुष्ट बनाव।।

जनकवि लक्ष्मण मस्तुरिया जी के सुप्रसिद्ध गीत ''चल–चल गा किसान बोए चली धान'' में छत्तीसगढ़ के किसान को परिश्रम के उपरांत बासी खाने के लिए संबोधित करते हुए लिखते है कि–

धंवरा रे बइला कोठा ले होंक रै।
खा ले न बासी बेरा हो तो गै।।

छत्तीसगढ़ी साहित्य के प्रमुख रचनाकार टिकेन्द्र टिकरिहा ने बासी को बटकी में खाने के संदर्भ पर अपने प्रसिद्ध नाटक में लिखा है–

उथलही के मरम जानिस नहीं
गहेंरिच के रहिगे ये बासी
पानी के मया म बूड़े रहिगे

हमर छत्तीसगढ़ के बासी।

ददरिया गायन शैली के प्रमुख गायक शेख हुसैन ने अपने गीत ''बटकी में बासी अउ चुटकी में नून'' में लिखा है कि–

बटकी में बासी अउ चुटकी में नून
में गावतथव ददरिया
तें कान देके सुन वो चना के दार

भिलाई के कचि रविशंकर शुक्ल के सुप्रसिद्ध ''लीम अउ आमा के छाँव, नरवा के तीर मोर गाँव'' के एक पद बासी के लिए समर्पित है–

खाथंव मँय बासी अउ नून,
गाथंव मँय माटी के गुन।
मँय तो छत्तीसगढ़िया आँव।।

खुर्सीपार भिलाई के कवि विमल कुमार पाठक के कविता मा बोरे–बारी का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है–

छानी चूहय टप टप टप टप
परछी मं सरि कुरिया मा।
बोरे बासी रखे कुंडेरा मा,
बटुवा मं, हड़िया मा।।

चंदैनी बेमेतरा के प्रसिद्ध गीतकार ज्ञानुदास मानिकपुरी ने बासी की महिमा और किसान के परिश्रम पर सुंदर गीत की रचना की है–

नाँगर बइला साथ, चूहय पसीना माथ
सुआ ददरिया गात, उठत बिहान हे।
खाके चटनी बासी ला, मिटाके औ थकासी ला
भजके अविनासी ला, बुता मा परान हे।।

धमधा के युवा गीतकार हेमलाल साहू ने तन–मन की मजबूती के लिए बासी के महत्व को अपने गीतों में ढ़ाला है–

लान बासी संग चटनी, सुन मया के गोठ गा।
खा बिहिनिया रोज बासी, होय तन हा पोठ गा।

इसी क्रम में नवागढ़ के गीतकार रमेश कुमार सिंह चौहान के एक गीत के हिस्से में बासी का सुंदर प्रयोग दिखलाई पड़ता है–

जुन्ना नाँगर बुढ़वा बइला, पटपर भुइयाँ जोतय कोन।
बटकी के बासी पानी के घइला, संगी के ददरिया होगे मोन।।

निष्कर्षः–

उपर्युक्त तथ्यों की विवेचना के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि छत्तीसगढ़ के जनजीवन में ''बोरे–बासी'' महत्वपूर्ण पारंपरिक खाद्य प्रदार्थ के रूप में प्रसिद्ध है। गर्मी के मौसम में छत्तीसगढ़ की ग्रामीण जनता का यह प्रमुख आहार है। छत्तीसगढ़ में चावल की पर्याप्त उपलब्धता है। बोरे–बासी एक सस्ता आहार है, जो बहुत जल्दी तैयार हो जाता है। इसीलिए छत्तीसगढ़ की आम जनता के साथ–साथ यह किसान, श्रमिक और मेहनतकश लोगों की पहली पसंद है। नए वैज्ञानिक शोध के उपरांत पता चलता है कि यह स्वास्थ्य की दृष्टि में पौष्टिक गुणों से भरपूर है। छत्तीसगढ़ अंचल की लोकसंस्कृति के अतंर्गत लोकसाहित्य, लोकगीत, लोकनाट्य आदि विधाओं में इसको महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

संदर्भ सूचीः–

1. डॉ. सुधीर शर्मा – बड़ सुग्घर बोरे–बासी, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)।
2. देवेन्द्र कश्यप – नवभारत टाईम्स, 1 मई 2022
3. डॉ. ओमप्रकाश डहरिया और श्री जी.एस. केशरवानी – गर्मी के मौसम में गुणकारी है बोरे–बासी, छत्तीसगढ़ जनसंपर्क, रायपुर (छ.ग.)।
4. परदेशी राम वर्मा – बासी अऊ तियासी, बड़ सुग्घर बोरे–बासी, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)।
5. अरूण कुमार निगम – छत्तीसगढ़ काव्य मा छत्तीसगढ़ के बासी, बड़ सुग्घर बोरे–बासी, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)।
6. डॉ. सत्यभामा आड़िल–छत्तीसगढ़ भाषा और संस्कृति,विकल्प प्रकाशन,रायपुर (छ.ग.)।
7. डॉ. शकुन्तला वर्मा– छत्तीसगढ़ी लोक–जीवन और लोकसाहित्य का अध्ययन, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद (उ. प्र.)।
8. दयाशंकर शुक्ल–छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन,वैभव प्रकाशन रायपुर (छ.ग.)।
9. छत्तीसगढ़ के बोरे–बासी को ओडिशा के पखाल सा पहचान मिले – deshdigital.in
10. ये है बोरे–बासी की अच्छाई गर्मी–लू से करेंगी लड़ाई – नयी दुनियां 1 मई 2022
11. गर्मी और लू से बचना है तो खाइए ये बोरे–बासी – www.patrika.com.
12. छत्तीसगढ़ का बोरे–बासी उत्सव – www.hariboomi.com.

☆☆☆